HINDI FILE

SIX SIGMA IAS

Dream | Dare | Deliver

DREAM FOR NATION | DARE TO SERVE | DELIVER WITH INTEGRITY

DAILY PRACTICE QUESTIONS

BEST FOR UPSC | UP PCS EXAM

DATE : AUGUST 7, 2026

Comprehensive Coverage | Exam-Focused Analysis | Concept Clarity & Insights | Practice MCQs with Explanation | Daily Updates, Better Results

CONTACT INFO:
+91 92896 33341 | +91 96679 33341

EMAIL ID:
info@sixsigmaias.com

WEB PAGE:
www.sixsigmaias.com

ADDRESS:
C-6, GROUND FLOOR, SECTOR 2,
NEAR SECTOR 15 METRO STATION, NOIDA – 201301, UTTAR PRADESH

दैनिक अभ्यास प्रश्न - स्थैतिक भाग से

प्रश्न 1. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लखनऊ अधिवेशन (1916) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. कांग्रेस ने कांग्रेस-लीग समझौते के हिस्से के रूप में मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचक मंडल (separate electorates) के सिद्धांत को स्वीकार किया।
2. इस अधिवेशन में राष्ट्रीय आंदोलन के तात्कालिक उद्देश्य के रूप में पूर्ण स्वतंत्रता (पूर्ण स्वराज) की औपचारिक मांग की गई।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) दोनों

(c) कोई नहीं

(d) निर्धारित नहीं किया जा सकता

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** लखनऊ समझौता (1916) कांग्रेस और मुस्लिम लीग के बीच एक ऐतिहासिक समझौते का प्रतिनिधित्व करता है। हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देने के लिए एक राजनीतिक समझौते के रूप में कांग्रेस ने मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचक मंडल को स्वीकार किया।
- **कथन 2 गलत है।** पूर्ण स्वराज की मांग केवल लाहौर अधिवेशन (1929) में जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में अपनाई गई थी। लखनऊ अधिवेशन मुख्य रूप से संवैधानिक सुधारों और ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर अधिक स्वशासन (self-government) पर केंद्रित था।

प्रश्न 2. निम्नलिखित में से कौन सा आर्द्रभूमि (wetlands) का सबसे उपयुक्त पारिस्थितिक कार्य है जो उन्हें नदी बेसिन के स्वास्थ्य को बनाए रखने में अपरिहार्य (indispensable) बनाता है?

(a) वे अतिरिक्त नदी निर्वहन को समाप्त करके स्थायी रूप से बाढ़ को रोकते हैं। (b) वे पोषक तत्व चक्र (nutrient cycling) का समर्थन करते हुए पानी के भंडारण, फ़िल्टरिंग और धीरे-धीरे छोड़ने के द्वारा प्राकृतिक हाइड्रोलॉजिकल बफर के रूप में कार्य करते हैं। (c) वे मुख्य रूप से जलीय जैव विविधता में सुधार के लिए मीठे पानी के पारिस्थितिक तंत्र की लवणता (salinity) बढ़ाते हैं। (d) वे भूजल पुनर्भरण (groundwater recharge) को कम करके नदी के प्रवाह को तेज करते हैं।

उत्तर: (b)

व्याख्या: आर्द्रभूमि (Wetlands) कई पारिस्थितिक कार्य करती हैं:

- वे भारी वर्षा के दौरान अतिरिक्त अपवाह (runoff) को अवशोषित करती हैं।

- वे भूजल को पुनर्भरण करती हैं।
- वे तलछट (sediments) और प्रदूषकों को फंसाती हैं।
- वे पोषक तत्व चक्र को नियंत्रित करती हैं।
- वे उच्च जैव विविधता का समर्थन करती हैं।

आर्द्रभूमि द्वारा बाढ़ को स्थायी रूप से नहीं रोका जा सकता है, और वे मीठे पानी की लवणता को नहीं बढ़ाते हैं या नदी के प्रवाह को तेज नहीं करते हैं।

प्रश्न 3. A1 बांड (A1 Bonds) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. A1 क्रेडिट रेटिंग आम तौर पर अपेक्षाकृत कम क्रेडिट जोखिम के साथ वित्तीय दायित्वों को पूरा करने के लिए जारीकर्ता की मजबूत क्षमता को इंगित करती है।
2. एक A1-रेटेड बांड अपनी उच्च क्रेडिट गुणवत्ता के कारण अनिवार्य रूप से डिफ़ॉल्ट जोखिम से मुक्त होता है।
3. जारीकर्ता के वित्तीय बुनियादी सिद्धांतों (fundamentals) में गिरावट के परिणामस्वरूप A1-रेटेड बांड को डाउनग्रेड किया जा सकता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) सभी तीन (d) कोई नहीं

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** A1 रेटिंग उच्च साख (creditworthiness) और एक मजबूत पुनर्भुगतान क्षमता को दर्शाती है।
- **कथन 2 गलत है।** कोई भी बांड, चाहे उसकी रेटिंग कुछ भी हो, पूरी तरह से जोखिम मुक्त नहीं होता है। A1 कम डिफ़ॉल्ट जोखिम को दर्शाता है, शून्य जोखिम को नहीं।
- **कथन 3 सही है।** क्रेडिट रेटिंग गतिशील (dynamic) होती हैं और यदि जारीकर्ता की वित्तीय स्थिति कमजोर होती है तो उन्हें डाउनग्रेड (downgrade) किया जा सकता है।

इसलिए, केवल कथन 1 और 3 सही हैं।

प्रश्न 4. ग्रहण के सिद्धांत (Doctrine of Eclipse) और पृथक्करणीयता के सिद्धांत (Doctrine of Severability) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. ग्रहण का सिद्धांत केवल संविधान-पूर्व (pre-Constitution) कानूनों पर लागू होता है जो मौलिक अधिकारों के साथ असंगत हो जाते हैं।
2. ग्रहण के सिद्धांत के तहत, असंगत कानून सभी उद्देश्यों के लिए शुरुआत से ही शून्य (void ab initio) होता है।
3. पृथक्करणीयता का सिद्धांत एक क़ानून के वैध हिस्से को जीवित रखने में सक्षम बनाता है यदि वह असंवैधानिक हिस्से को हटाने के बाद स्वतंत्र रूप से काम कर सकता है।

4. पृथक्करणीयता का सिद्धांत केवल वहीं लागू हो सकता है जहां असंवैधानिक और संवैधानिक प्रावधान अविभाज्य (inseparable) हों।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं? (a) केवल एक (b) केवल दो (c) केवल तीन (d) सभी चार

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** ग्रहण का सिद्धांत मुख्य रूप से मौलिक अधिकारों के साथ असंगत संविधान-पूर्व कानूनों पर लागू होता है।
- **कथन 2 गलत है।** ऐसे कानून शुरुआत से ही शून्य (void ab initio) नहीं होते हैं; वे ग्रहण (eclipsed) की स्थिति में रहते हैं और संवैधानिक असंगति के गायब होने पर पुनर्जीवित (revive) हो सकते हैं।
- **कथन 3 सही है।** पृथक्करणीयता का सिद्धांत कानून के वैध हिस्से को सुरक्षित रखता है यदि यह स्वतंत्र और कार्यशील (workable) है।
- **कथन 4 गलत है।** पृथक्करणीयता (Severability) तभी काम करती है जब वैध और अमान्य प्रावधान विभाज्य (separable) हों, न कि अविभाज्य (inseparable)।

इसलिए, कथन 1 और 3 सही हैं।

प्रश्न 5. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

दावा (A): पर्वतीय वर्षा (Orographic rainfall) आम तौर पर पर्वत श्रृंखलाओं के पवनाभिमुखी (windward) ढलान पर होती है।

कारण I: नम हवा को पहाड़ की ढलानों पर ऊपर चढ़ने के लिए मजबूर किया जाता है, जिससे रुद्धोष्म शीतलन (adiabatic cooling) और संघनन (condensation) होता है।

कारण II: पवनविमुखी (leeward) पक्ष नीचे उतरती हुई हवा का अनुभव करता है जो गर्म और शुष्क हो जाती है, जो अक्सर वृष्टि-छाया (rain-shadow) क्षेत्र बनाती है।

निम्नलिखित में से कौन सा सही है?

(a) दावा सही है, और कारण I और कारण II दोनों सही हैं, और दोनों दावे की सही व्याख्या करते हैं।

(b) दावा सही है, कारण I सही है लेकिन कारण II गलत है।

(c) दावा गलत है, लेकिन कारण I और कारण II दोनों सही हैं।

(d) दावा सही है, लेकिन न तो कारण I और न ही कारण II दावे की सही व्याख्या करता है।

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **दावा सही है।** पर्वतीय वर्षा विशेष रूप से पहाड़ों के पवनाभिमुखी ढलान से जुड़ी होती है।

- **कारण I सही है** और सीधे इसकी प्रक्रिया (mechanism) की व्याख्या करता है। नम हवा ऊपर उठती है, फैलती है, रुद्धोष्म रूप से (adiabatically) ठंडी होती है, ओसांक बिंदु (dew point) तक पहुंचती है, और वर्षा उत्पन्न करने के लिए संघनित होती है।
- **कारण II भी सही है।** पवनाभिमुखी पक्ष में नमी खोने के बाद, हवा पवनविमुखी ढलान पर नीचे उतरती है, संपीड़न (compression) के माध्यम से गर्म हो जाती है, और एक वृष्टि-छाया (rain-shadow) प्रभाव पैदा करती है, जो इस बात को पुष्ट करती है कि वर्षा पवनाभिमुखी पक्ष पर ही केंद्रित क्यों होती है।

इसलिए, दोनों कारण सही हैं और एक साथ दावे की व्याख्या करते हैं।

दैनिक अभ्यास प्रश्न – करंट अफेयर्स अनुभाग से

प्रश्न 1. कोयला विनिमय नियम, 2026 (Coal Exchange Rules, 2026) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. कोयला नियंत्रक संगठन (CCO) को कोयला विनिमय (Coal Exchanges) के पंजीकरण और विनियमन के लिए वैधानिक प्राधिकरण के रूप में नामित किया गया है।
2. कोयला विनिमय ढांचा कोयला विपणन (coal marketing) को "एक-से-अनेक" (one-to-many) मॉडल से बाजार संचालित "अनेक-से-अनेक" (many-to-many) ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म में बदलने का प्रयास करता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) दोनों कथन सही हैं

(c) कोई भी कथन सही नहीं है

(d) कथन 2 सही है, लेकिन कथन 1 गलत है

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** कोयला विनिमय नियम, 2026 कोयला नियंत्रक संगठन (CCO) को कोयला विनिमय के पंजीकरण, विनियमन और निरीक्षण के लिए जिम्मेदार नियामक प्राधिकरण के रूप में नामित करते हैं।
- **कथन 2 सही है।** यह सुधार पारदर्शी मूल्य खोज और कुशल व्यापार के उद्देश्य से पारंपरिक "एक-से-अनेक" कोयला विपणन प्रणाली को "अनेक-से-अनेक" विनिमय-आधारित तंत्र से बदलता है।

प्रश्न 2. हाल ही में शुरू की गई दानवीर (DAANVEER) पहल मुख्य रूप से किससे संबंधित है?

(a) एक राष्ट्रव्यापी डिजिटल रजिस्ट्री के माध्यम से स्वैच्छिक अंग दान को बढ़ावा देना।

(b) प्रौद्योगिकी-सक्षम प्लेटफॉर्मों के माध्यम से अधिशेष भोजन और आवश्यक वस्तुओं के संरचित दान और पुनर्वितरण को सुगम बनाना।

(c) सीएसआर (CSR) दायित्वों के तहत कॉर्पोरेट परोपकार के लिए वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करना।

(d) सामाजिक उद्यमों के लिए एक समर्पित उद्यम पूंजी (venture capital) कोष बनाना।

उत्तर: (b)

व्याख्या:

दानवीर (DAANVEER) पहल का उद्देश्य योग्य लाभार्थियों को उपयोग योग्य अधिशेष संसाधनों के प्रौद्योगिकी-संचालित संग्रह और पुनर्वितरण को सक्षम करके संरचित देने (structured giving) की संस्कृति को मजबूत करना है। यह समन्वित डिजिटल तंत्र के माध्यम से आवश्यक वस्तुओं की पहुंच में सुधार करते हुए बर्बादी को कम करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

प्रश्न 3. हुबारा बस्टर्ड (Houbara Bustard) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह प्रजाति लंबी दूरी की प्रवासी आबादी के लिए जानी जाती है जो भारतीय उपमहाद्वीप के हिस्सों में सर्दियां बिताती है।
2. इंटरनेशनल फंड फॉर हुबारा कंजर्वेशन (IFHC) ने इस प्रजाति के लिए कैप्टिव ब्रीडिंग (captive breeding) और संरक्षण कार्यक्रम शुरू किए हैं।
3. शिकार का दबाव और निवास स्थान का क्षरण इस प्रजाति के लिए प्रमुख संरक्षण चिंताएं बने हुए हैं।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** हुबारा बस्टर्ड की कई आबादी लंबी प्रवासी यात्राएं करती है, जिसमें उत्तर पश्चिमी भारत के हिस्से शीतकालीन निवास स्थान (wintering grounds) के रूप में कार्य करते हैं।
- **कथन 2 सही है।** इंटरनेशनल फंड फॉर हुबारा कंजर्वेशन (IFHC) दुनिया के सबसे बड़े कैप्टिव ब्रीडिंग और रिलीज कार्यक्रमों में से एक चलाता है।

- **कथन 3 सही है।** संरक्षण पहलों के बावजूद अवैध शिकार, आवास क्षरण और व्यवधान मुख्य खतरे बने हुए हैं।

इसलिए, सभी तीन कथन सही हैं।

प्रश्न 4. रुपये के मूल्यवर्ग (Rupee Valuation) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारतीय रुपये के अवमूल्यन (Depreciation) से निर्यात और आयात की मूल्य लोच (price elasticity) की परवाह किए बिना भारत के व्यापार संतुलन में अनिवार्य रूप से सुधार होता है।
2. अन्य बातें समान रहने पर, एक मजबूत रुपया आम तौर पर आयातित कच्चे तेल की घरेलू लागत को कम करता है।
3. नाममात्र विनिमय दर (nominal exchange rate) और वास्तविक प्रभावी विनिमय दर (REER) हमेशा एक ही दिशा में बढ़ते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) सभी तीन

(d) कोई नहीं

उत्तर: (a)

व्याख्या:

- **कथन 1 गलत है।** अवमूल्यन के बाद व्यापार संतुलन में सुधार मार्शल-लर्नर शर्त (Marshall–Lerner condition) जैसे कारकों पर निर्भर करता है; अवमूल्यन स्वतः ही व्यापार संतुलन में सुधार नहीं करता है।
- **कथन 2 सही है।** मूल्यवान (मजबूत) होता रुपया आम तौर पर कच्चे तेल जैसे आयात की घरेलू मुद्रा लागत को कम करता है।
- **कथन 3 गलत है।** REER मुद्रास्फीति के अंतर और व्यापार भार का समायोजन करता है; इसलिए, यह आवश्यक नहीं है कि वह नाममात्र विनिमय दर के समान ही चले।

केवल कथन 2 सही है।

प्रश्न 5. केंद्रीय मंत्री के इस्तीफे और पुनर्नियुक्ति से संबंधित संवैधानिक स्थिति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. इस्तीफा देने वाले केंद्रीय मंत्री को प्रधानमंत्री की सलाह पर राष्ट्रपति द्वारा पुनः नियुक्त किया जा सकता है।
2. प्रत्येक केंद्रीय मंत्री को बिना किसी अपवाद के अपने कार्यकाल के दौरान अनिवार्य रूप से संसद का सदस्य बने रहना चाहिए।

3. एक व्यक्ति जो संसद का सदस्य नहीं है, उसे केंद्रीय मंत्री के रूप में नियुक्त किया जा सकता है, लेकिन उसे छह महीने के भीतर किसी भी सदन की सदस्यता प्राप्त करनी होगी।
4. व्यक्तिगत इस्तीफों या पुनर्नियुक्तियों के बावजूद लोकसभा के प्रति मंत्रिपरिषद का सामूहिक उत्तरदायित्व बना रहता है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (c)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** इस्तीफे के बाद पुनर्नियुक्ति पर कोई संवैधानिक प्रतिबंध नहीं है।
- **कथन 2 गलत है।** अनुच्छेद 75 एक गैर-सांसद को छह महीने तक मंत्री बने रहने की अनुमति देता है, बशर्ते उस अवधि के भीतर सदस्यता हासिल कर ली जाए।
- **कथन 3 सही है।** यह सीधे अनुच्छेद 75(5) से उत्पन्न होता है।
- **कथन 4 सही है।** मंत्रीस्तरीय संरचना में बदलाव के बावजूद अनुच्छेद 75(3) के तहत सामूहिक उत्तरदायित्व (collective responsibility) जारी रहता है।

इसलिए, कथन 1, 3 और 4 सही हैं।

प्रश्न 6. एआई पैलेलेटाइजिंग (AI Palletising) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. एआई पैलेटाइजिंग सिस्टम पैकेज के स्टैकिंग पैटर्न (stacking pattern) को अनुकूलित करने के लिए कंप्यूटर विज़न और मशीन लर्निंग का उपयोग करते हैं।
2. एआई पैलेटाइजिंग का मुख्य उद्देश्य वेयरहाउस मैनेजमेंट सिस्टम (WMS) की आवश्यकता को समाप्त करना है।
3. एआई-सक्षम पैलेटाइजिंग उत्पाद क्षति को कम करके और लोड स्थिरता को अनुकूलित करके रसद दक्षता (logistics efficiency) में सुधार कर सकता है।
4. एआई पैलेटाइजिंग केवल भारी विनिर्माण उद्योगों में लागू होता है और ई-कॉमर्स रसद के लिए अनुपयुक्त है।

उपरोक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

उत्तर: (b)

व्याख्या:

- **कथन 1 सही है।** एआई पैलेलेटाइजिंग इंटेलिजेंट स्टैकिंग के लिए कंप्यूटर विज़न, रोबोटिक्स और ऑप्टिमाइजेशन एल्गोरिदम को नियोजित करता है।
- **कथन 2 गलत है।** यह वेयरहाउस मैनेजमेंट सिस्टम को बदलने के बजाय उसका पूरक (complements) बनता है।
- **कथन 3 सही है।** एआई स्टैकिंग पैटर्न को अनुकूलित करता है, जिससे लोड स्थिरता में सुधार होता है और परिवहन नुकसान कम होता है।
- **कथन 4 गलत है।** एआई पैलेटाइजिंग का व्यापक रूप से ई-कॉमर्स, एफएमसीजी (FMCG), फार्मास्यूटिकल्स, खाद्य प्रसंस्करण और विनिर्माण में उपयोग किया जाता है।

इसलिए, कथन 1 और 3 सही हैं।

प्रश्न 7. भारत के रूपरेखा मानचित्र पर, कावेरी नदी (Cauvery River) निम्नलिखित में से किस स्थान से निकलती है?

(a) महाबलेश्वर पहाड़ियाँ

(b) ब्रह्मगिरि पहाड़ियाँ

(c) नल्लामाला पहाड़ियाँ

(d) अनाईमलाई पहाड़ियाँ

उत्तर: (b)

व्याख्या:

कावेरी नदी कर्नाटक के कोडागु (कुर्ग) जिले में पश्चिमी घाट की **ब्रह्मगिरि पहाड़ियों** में तलकावेरी से निकलती है। यह बंगाल की खाड़ी में गिरने से पहले एक उपजाऊ डेल्टा के माध्यम से कर्नाटक और तमिलनाडु से होकर बहती है।

दैनिक अभ्यास हेतु विषय आधारित प्रश्न

(जीएस पेपर I – भारतीय समाज)

प्रश्न 1. "भारतीय समाज एक साथ निरंतरता (continuity) और परिवर्तन (change) की शक्तियों का साक्षी बन रहा है। चर्चा कीजिए कि कैसे वैश्वीकरण, शहरीकरण और तकनीकी परिवर्तन ने भारतीय समाज की कुछ स्थायी विशेषताओं को बनाए रखते हुए पारंपरिक सामाजिक संरचना को बदल दिया है।" (15 अंक | 250 शब्द)

नमूना उत्तर: भारतीय समाज ऐतिहासिक रूप से परंपरा और परिवर्तन की एक जटिल परस्पर क्रिया के माध्यम से विकसित हुआ है। जबकि परिवार, जाति, धर्म और समुदाय जैसी संस्थाएं सामाजिक व्यवहार को आकार देना जारी रखती हैं, वहीं तीव्र वैश्वीकरण, शहरीकरण और तकनीकी प्रगति ने सामाजिक संबंधों, व्यवसायों, आकांक्षाओं और सांस्कृतिक प्रथाओं को मौलिक रूप से बदल दिया है। इसलिए, समकालीन भारतीय समाज निरंतरता और परिवर्तन का एक अनूठा सह-अस्तित्व प्रस्तुत करता है।

शहरीकरण ने एकल परिवारों, अधिक भौगोलिक गतिशीलता और व्यावसायिक विविधीकरण को प्रोत्साहित करके पारंपरिक संयुक्त परिवार प्रणाली को कमजोर कर दिया है। शहरों में प्रवास ने वंशानुगत व्यवसायों के प्रभुत्व को कम कर दिया है और शिक्षा तथा कौशल के आधार पर अवसरों का विस्तार किया है। हालांकि, शहरी आबादी के बीच भी, रिश्तेदारी नेटवर्क (kinship networks) विवाह, विरासत और सामाजिक सहायता को प्रभावित करते रहते हैं।

वैश्वीकरण ने व्यापार, मीडिया और शिक्षा के माध्यम से वैश्विक संस्कृतियों के प्रति जोखिम (exposure) बढ़ाया है। उपभोक्तावाद, व्यक्तिवाद और बदलती जीवन शैली ने खान-पान की आदतों, पहनावे, कार्य संस्कृति और आकांक्षाओं को प्रभावित किया है। इसके साथ ही, त्योहार, क्षेत्रीय पहचान और स्वदेशी परंपराएं फलना-फूलना जारी रखे हुए हैं, जो भारत की सांस्कृतिक विविधता के लचीलेपन (resilience) को प्रदर्शित करती हैं।

प्रौद्योगिकी ने संचार, शासन और शिक्षा को बदल दिया है। सोशल मीडिया ने हाशिए पर मौजूद आवाज़ों को प्रवर्धित (amplify) किया है, सामाजिक आंदोलनों को सुगम बनाया है और सूचना तक पहुँच का विस्तार किया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने वित्तीय समावेशन, ई-गवर्नेंस और ऑनलाइन शिक्षा में सुधार किया है। फिर भी, डिजिटल विभाजन (digital divide), गलत सूचना (misinformation) और साइबर अपराध महत्वपूर्ण चुनौतियाँ बने हुए हैं।

जाति व्यवस्था में महत्वपूर्ण बदलाव आया है। संवैधानिक सुरक्षा उपायों, सकारात्मक कार्रवाई (सकारात्मक भेदभाव) और आर्थिक आधुनिकीकरण ने पारंपरिक व्यावसायिक कठोरता को कमजोर कर दिया है। फिर भी जाति चुनावी राजनीति, वैवाहिक विकल्पों और स्थानीय सामाजिक पदानुक्रमों को प्रभावित करती रहती है।

इसी तरह, उच्च महिला साक्षरता, कार्यबल में भागीदारी और कानूनी सुधारों के कारण लैंगिक संबंधों में बदलाव आ रहा है। महिलाएं प्रशासन, व्यवसाय और राजनीति में तेजी से नेतृत्व के पदों पर काबिज हो रही हैं। हालांकि, लैंगिक हिंसा, वेतन असमानता और असमान अवैतनिक देखभाल कार्य (unpaid care work) जैसी समस्याएं बनी हुई हैं।

धर्म एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था बना हुआ है। हालांकि आधुनिकीकरण ने तर्कसंगतता और धर्मनिरपेक्ष संवैधानिक मूल्यों को प्रोत्साहित किया है, फिर भी धार्मिक पहचान सांस्कृतिक प्रथाओं और राजनीतिक लामबंदी को आकार देती रहती है।

इस प्रकार, भारतीय समाज न तो पूरी तरह से पारंपरिक है और न ही पूरी तरह से आधुनिक। इसके बजाय, यह अनुकूलन की एक प्रक्रिया को दर्शाता है जिसमें पारंपरिक संस्थाएं गायब होने के बजाय विकसित होती हैं। इसलिए, न्यायसंगत और सतत सामाजिक परिवर्तन सुनिश्चित करने के लिए लोक नीति को आधुनिकीकरण के साथ सामाजिक समावेशन, सांस्कृतिक संरक्षण और संवैधानिक मूल्यों का संतुलन बनाना चाहिए।

(जीएस पेपर II – राजव्यवस्था एवं शासन)

प्रश्न 2. "यद्यपि राष्ट्रपति और राज्यपाल के पद संवैधानिक रूप से समान हैं, लेकिन उनकी शक्तियां और व्यावहारिक भूमिकाएं काफी भिन्न हैं। राष्ट्रपति की तुलना में राज्यपाल की संवैधानिक स्थिति का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।" (15 अंक | 250 शब्द)

नमूना उत्तर: संविधान राष्ट्रपति की कल्पना संघ के संवैधानिक प्रमुख के रूप में और राज्यपाल की कल्पना राज्य के संवैधानिक प्रमुख के रूप में करता है। हालांकि कई संवैधानिक प्रावधान एक-दूसरे को दर्शाते हैं, फिर भी अंतर इसलिए उभरते हैं क्योंकि भारत एक मजबूत संघ के साथ एक संघीय ढांचे का पालन करता है।

राष्ट्रपति का चुनाव अप्रत्यक्ष रूप से संसद और राज्य विधानसभाओं दोनों का प्रतिनिधित्व करने वाले एक निर्वाचक मंडल (Electoral College) के माध्यम से किया जाता है। इसके विपरीत, राज्यपाल को राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त किया जाता है और वह राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत (pleasure of the President) पद धारण करता है, जिससे यह पद केंद्रीय कार्यकारिणी से अधिक निकटता से जुड़ जाता है।

दोनों पद आमतौर पर अपनी-अपनी मंत्रिपरिषद की सहायता और सलाह पर कार्य करते हैं। हालांकि, राज्यपाल के पास कुछ स्वविवेकीय शक्तियां (discretionary powers) हैं जो राष्ट्रपति के पास समान रूप से उपलब्ध नहीं हैं। इनमें त्रिशंकु विधानसभा में सरकार बनाने के लिए नेता को आमंत्रित करना, अनुच्छेद 200 के तहत राष्ट्रपति के विचारार्थ विधेयकों को आरक्षित करना, और अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति शासन की सिफारिश करने वाली रिपोर्ट प्रस्तुत करना शामिल है।

राष्ट्रपति की विधायी शक्तियों में संसद को आहूत करना, अनुच्छेद 123 के तहत अध्यादेश प्रख्यापित करना और विधेयकों पर अनुमति देना शामिल है। राज्यपाल अनुच्छेद 174 और 213 के तहत राज्य विधानसभाओं के लिए समान कार्य करते हैं, हालांकि उनके कार्यों से विधेयकों के आरक्षण के माध्यम से केंद्र-राज्य संबंध सीधे प्रभावित हो सकते हैं।

व्यावहारिक रूप से, राज्यपालों से जुड़े विवाद अक्सर सरकार गठन, विधायी सत्रों और विश्वविद्यालय नियुक्तियों को लेकर उत्पन्न होते हैं। सर्वोच्च न्यायालय ने राज्यपाल के स्वविवेक के प्रयोग में संवैधानिक नैतिकता, संघवाद और तटस्थता पर बार-बार जोर दिया है।

परंपरा के अनुसार, राष्ट्रपति सीमित संवैधानिक परिस्थितियों को छोड़कर लगभग पूरी तरह से मंत्रीस्तरीय सलाह पर कार्य करते हैं। राज्यपाल का स्वविवेक का दायरा अपेक्षाकृत व्यापक है, हालांकि न्यायिक समीक्षा ने यह सुनिश्चित किया है कि ऐसा स्वविवेक पूर्ण या निरंकुश नहीं है।

एक संतुलित व्याख्या के लिए आवश्यक है कि राज्यपाल राजनीतिक कर्ताओं के बजाय निष्पक्ष संवैधानिक अभिभावकों के रूप में कार्य करें। परंपराओं को मजबूत करना, पारदर्शिता सुनिश्चित करना और सरकारिया तथा पुंछी जैसे आयोगों की सिफारिशों को लागू करना सहकारी संघवाद में सुधार कर सकता है।

इसलिए, जबकि संवैधानिक समानताएं मौजूद हैं, कार्यात्मक अंतर भारत के अर्ध-संघीय (quasi-federal) ढांचे और केंद्र-राज्य संवैधानिक संबंधों में राज्यपाल की अनूठी भूमिका से उत्पन्न होते हैं।

(जीएस पेपर III – अर्थव्यवस्था)

प्रश्न 3. "तेजी से वैश्वीकृत होती अर्थव्यवस्था में, घरेलू समष्टि आर्थिक (macroeonomic) स्थिरता जितनी ही बाहरी क्षेत्र की स्थिरता भी महत्वपूर्ण हो गई है। भारत के बाहरी क्षेत्र के प्रदर्शन के प्रमुख निर्धारकों और इसे मजबूत करने के लिए आवश्यक नीतिगत उपायों की चर्चा कीजिए।" (15 अंक | 250 शब्द)

नमूना उत्तर: बाहरी क्षेत्र में वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार, पूंजी प्रवाह, विदेशी मुद्रा भंडार और विनिमय दर प्रबंधन शामिल है। इसकी स्थिरता सीधे आर्थिक वृद्धि, मुद्रास्फीति, रोजगार और निवेश को प्रभावित करती है।

भारत का बाहरी क्षेत्र सेवाओं, फार्मास्यूटिकल्स, इंजीनियरिंग सामान और सूचना प्रौद्योगिकी के निर्यात के माध्यम से काफी विविध हो गया है। मजबूत विदेशी मुद्रा भंडार ने बाहरी झटकों के खिलाफ लचीलापन बढ़ाया है।

हालांकि, कच्चे तेल के आयात पर निरंतर निर्भरता चालू खाता घाटे (CAD) में महत्वपूर्ण योगदान देती है। वैश्विक कमोडिटी की कीमतों में उतार-चढ़ाव, भू-राजनीतिक तनाव और विनिमय दर में अस्थिरता समष्टि आर्थिक स्थिरता को प्रतिकूल रूप से प्रभावित कर सकती है।

प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI), विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) और बाह्य वाणिज्यिक उधारों (ECB) के माध्यम से पूंजी का प्रवाह घरेलू बचत को पूरा करता है। फिर भी, अस्थिर पोर्टफोलियो प्रवाह वैश्विक अनिश्चितता की अवधि के दौरान अर्थव्यवस्था को अचानक बदलावों (sudden reversals) के जोखिम में डालते हैं।

भारतीय रिजर्व बैंक व्यवस्थित विनिमय दर आंदोलनों को बनाए रखने, तरलता का प्रबंधन करने और वित्तीय स्थिरता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। विनिमय दर में लचीलापन अत्यधिक अस्थिरता को रोकते हुए बाहरी झटकों को सोखने में मदद करता है।

नीतिगत प्राथमिकताओं में शामिल हैं:

- निर्यात बाजारों का विविधीकरण करना।
- उच्च मूल्य वाले विनिर्माण को बढ़ावा देना।
- लॉजिस्टिक्स बुनियादी ढांचे में सुधार करना।
- मुक्त व्यापार समझौतों (FTAs) का विस्तार करना।
- औद्योगिक नीतियों के तहत घरेलू उत्पादन को प्रोत्साहित करना।
- आयात निर्भरता को कम करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ाना।
- डिजिटल निर्यात और सेवाओं की प्रतिस्पर्धात्मकता को मजबूत करना।

दीर्घकालिक बाहरी स्थिरता के लिए उत्पादकता में वृद्धि, राजकोषीय विवेक, मजबूत वित्तीय विनियमन और नवाचार संचालित विकास की आवश्यकता होती है।

एक लचीला बाह्य क्षेत्र निवेशक के विश्वास को बढ़ाता है, सतत विकास का समर्थन करता है और वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की स्थिति को मजबूत करता है।

(जीएस पेपर IV – नीतिशास्त्र, सत्यनिष्ठा और अभिरुचि)

प्रश्न 4. "सत्यनिष्ठा (Integrity) की परीक्षा तब नहीं होती जब निर्णय आसान होते हैं, बल्कि तब होती है जब व्यक्तिगत हित का सार्वजनिक कर्तव्य से टकराव होता है। उपयुक्त उदाहरणों के साथ चर्चा कीजिए।" (10 अंक | 150 शब्द)

नमूना उत्तर: सत्यनिष्ठा मूल्यों, निर्णयों और कार्यों के बीच निरंतरता का प्रतिनिधित्व करती है। एक लोक सेवक व्यक्तिगत लाभ, राजनीतिक दबाव या संस्थागत सुविधा से ऊपर संवैधानिक मूल्यों और जन कल्याण को रखकर सत्यनिष्ठा का प्रदर्शन करता है।

नैतिक दुविधाएं अक्सर तब उत्पन्न होती हैं जब निजी हितों का आधिकारिक जिम्मेदारियों से टकराव होता है। उदाहरण के लिए, एक सिविल सेवक को भर्ती में रिश्तेदारों का पक्ष लेने, खरीद निर्णयों को प्रभावित करने या प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा नियामक उल्लंघनों को नजरअंदाज करने के दबाव का सामना करना पड़ सकता है। ऐसे दबावों के बावजूद निष्पक्ष रूप से कार्य करना सत्यनिष्ठा को दर्शाता है।

सत्यनिष्ठा में पारदर्शिता, जवाबदेही और साहस भी शामिल है। जो अधिकारी व्यक्तिगत जोखिमों के बावजूद भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करते हैं, वे नैतिक नेतृत्व का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। इसी तरह, उपहारों को मना करना, हितों के टकराव को रोकना और कल्याणकारी योजनाओं का निष्पक्ष कार्यान्वयन सुनिश्चित करना जनता के विश्वास को मजबूत करता है।

महत्वपूर्ण आयामों में शामिल हैं:

- निर्णय लेने में ईमानदारी।
- निष्पक्षता।
- जवाबदेही।
- विश्वास का साहस (Courage of conviction)।
- संवैधानिक नैतिकता के प्रति प्रतिबद्धता।

सत्यनिष्ठा सहानुभूति से गहराई से जुड़ी हुई है। नैतिक शासन के लिए कानून का दया और करुणा के साथ संतुलन आवश्यक है, विशेष रूप से वंचित और संवेदनशील समुदायों के साथ व्यवहार करते समय।

संस्थाएं पारदर्शी प्रक्रियाओं, डिजिटल प्रशासन, व्हिसलब्लोअर संरक्षण, स्वतंत्र सतर्कता तंत्र और नैतिकता प्रशिक्षण के माध्यम से सत्यनिष्ठा को मजबूत कर सकती हैं।

अंततः, सत्यनिष्ठा सुशासन की नैतिक नींव बनाती है। यह सुनिश्चित करती है कि सार्वजनिक शक्ति एक संवैधानिक ट्रस्ट बनी रहे जिसका प्रयोग निजी लाभ के बजाय केवल जन कल्याण के लिए किया जाए।

(करंट अफेयर्स – राजनीति का अपराधीकरण)

प्रश्न 5. "न्यायिक हस्तक्षेपों और चुनावी सुधारों के बावजूद राजनीति का अपराधीकरण लोकतांत्रिक शासन को कमजोर कर रहा है। इसके कारणों, परिणामों का परीक्षण कीजिए और इस चुनौती से निपटने के लिए एक व्यापक रोडमैप का सुझाव दीजिए।" (15 अंक | 250 शब्द)

नमूना उत्तर: राजनीति के अपराधीकरण से तात्पर्य चुनावी राजनीति में गंभीर आपराधिक आरोपों का सामना कर रहे व्यक्तियों की बढ़ती भागीदारी से है। यह मुद्दा लोकतांत्रिक वैधता को खतरे में डालता है, शासन को कमजोर करता है और संवैधानिक संस्थाओं में जनता के विश्वास को मिटाता है।

कई कारक इस घटना में योगदान देते हैं। चुनाव अत्यधिक महंगे हो गए हैं, जिससे पर्याप्त वित्तीय संसाधनों और स्थानीय प्रभाव वाले उम्मीदवारों को प्रोत्साहन मिलता है। धीमी न्यायिक प्रक्रियाएं आरोपियों को मामलों के अंतिम फैसले तक पहुंचने से पहले कई चुनाव लड़ने की अनुमति देती हैं। राजनीतिक दल अक्सर नैतिक मानकों पर चुनावी जीत (winnability) को प्राथमिकता देते हैं। पहचान की राजनीति और संरक्षण नेटवर्क (patronage networks) इस प्रवृत्ति को और मजबूत करते हैं।

इसके परिणाम महत्वपूर्ण हैं। अपराधीकरण विधायी बहस की गुणवत्ता को कम करता है, लोकतांत्रिक संस्थाओं में जनता के विश्वास को कमजोर करता है और भ्रष्टाचार, नीतिगत capture और राज्य तंत्र के दुरुपयोग के जोखिम को बढ़ाता है। यह योग्य और नैतिक नागरिकों को सार्वजनिक जीवन में प्रवेश करने से भी हतोत्साहित कर सकता है।

सर्वोच्च न्यायालय ने उम्मीदवारों द्वारा आपराधिक पूर्ववृत्त (antecedents) को अनिवार्य रूप से प्रकट करने का निर्देश दिया है और राजनीतिक दलों से सार्वजनिक रूप से यह समझाने की मांग की है कि ऐसे उम्मीदवारों को क्यों चुना गया। इन उपायों ने पारदर्शिता बढ़ाई है लेकिन समस्या को काफी हद तक कम नहीं किया है क्योंकि मतदाताओं के पास अक्सर व्यावहारिक विकल्पों का अभाव होता है और आपराधिक मुकदमे लंबे समय तक खिंचते रहते हैं।

एक व्यापक रोडमैप में शामिल होना चाहिए:

- निर्वाचित प्रतिनिधियों से जुड़े आपराधिक मामलों का समयबद्ध निपटारा।
- राजनीतिक वित्तपोषण में अधिक पारदर्शिता।
- राजनीतिक दलों के भीतर आंतरिक लोकतंत्र।
- मजबूत मतदाता जागरूकता अभियान।
- निर्दोषता के अनुमान (presumption of innocence) का सम्मान करते हुए, गंभीर आपराधिक आरोपों का सामना कर रहे उम्मीदवारों को हतोत्साहित करने के लिए चुनावी सुधार।
- पुलिसिंग, अभियोजन और न्यायिक क्षमता में सुधार।

अंततः, अपराधीकरण से निपटने के लिए संस्थागत सुधार, राजनीतिक इच्छाशक्ति और सूचित नागरिक भागीदारी की आवश्यकता है। टिकाऊ लोकतांत्रिक शासन न केवल निष्पक्ष चुनावों पर बल्कि यह सुनिश्चित करने पर भी निर्भर करता है कि सार्वजनिक पद सौंपे गए लोग संवैधानिक मूल्यों, सत्यनिष्ठा और जवाबदेही को बनाए रखें।

SIXSIGMA IAS
Dream | Dare | Deliver